पाठ 8. खूँ की कुकड़ूँ कूँ

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को घमंड न करने और एक-दूसरे की मदद करने हेतु प्रेरित करना है। हमें हर समय चौकस रहना चाहिए क्योंकि खतरा कभी भी कहीं से भी आ सकता है। मुसीबत के समय दूसरों की मदद करना ही हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

पाठ का सारांश

एक बड़ा-सा और लाल चोंच वाला मुर्गा था। उसका नाम 'खूँ' था। कई दिनों से एक लोमड़ी उसको खाने की ताक में थी। परंतु खूँ हमेशा उससे बच जाता था। इसलिए खूँ स्वयं को चतुर समझने लगा। एक दिन खूँ को पेड़ से गिरता देख सभी जानवर उस पर हँसने लगे। इस बात पर खूँ को गुस्सा आ गया। अगले दिन सभी जानवरों को सबक सिखाने के लिए मुर्गे ने बाँग नहीं दी और सब जानवर सोते ही रह गए। लोमड़ी ने सबको सोता देखकर खूँ को पकड़ने की कोशिश की। खूँ की आवाज़ सुनकर सभी जानवर उठ गए। उन्होंने लोमड़ी से खूँ की जान बचाई। खूँ ने सभी जानवरों का धन्यवाद किया और अपनी भूल के लिए माफ़ी माँगी। अब मुर्गा 'कुकड़ूँ-खूँ' की जगह 'कुकड़ूँ-कूँ' बोलने लगा।

अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पूर्व बच्चों से **पहले पहल** में दी गई गतिविधि करवाएँ तथा पाठ की पृष्ठभूमि से संबंधित चर्चा करें। बच्चों से पूछें, क्या उन्होंने कभी सुबह-सुबह मुर्गे को बोलते सुना है, उन्हें अन्य जानवरों की आवाज़ से भी अवगत कराएँ। अब पाठ का क्रमानुसार पठन कराएँ।

बच्चों से पूछिए तथा उन्हें समझाएँ–

- क्या उन्होंने कभी लोमड़ी देखी है?
- बच्चों को समझाएँ कि हमें कभी घमंड नहीं करना चाहिए।
- पाठ के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।
- बच्चों से पालतू और जंगली जानवरों के नाम पूछें।
- उन्हें बताएँ कि ज़रूरत से अधिक खाना नहीं खाना चाहिए।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।